नए साल के आगमन पर, न चाहते हुए सामना, दुष्ट राक्षस, ओमिक्रोन वायरस से, उस सुबह मैं , अति अचंभित, कैसे बिना नामांकन, मिली ‘कोविड़ क्लब’ सदस्यता, सच था समझ परे, क्यों ? ईमानदारी, शिद्दत साथ निभाए थे, ‘कोविड़ गाइडलाइंस’ याद ही नहीं पड़ता, कब दी ढिलाई, ‘भूले’ मास्क बिना दुनिया, फिर यह दुर्घटना ? शायद दर्ज था नाम, इस अनहोनी, अनचाही प्रतिकूल कतार में, बस हुए मनोनीत।

‘सब दिन होत न एक समान’ एक बार फिर, जख्म, धूमिल सी यादें, हुई सब हरी, अपनों की पीड़ा, उन्हें खोने-बिछड़ने का सिलसिला रफ्ता-रफ्ता थमा था, उभरे थे, भावनाओं से खिलवाड़, मानसिक आघात, शारीरिक कष्ट ही तो है, ‘कोरोना फितरत’ मातृ भावना की भी नहीं कदर, दुख दर्द न समझें, अवसर पाते, सब को ले दबोचे। मां चिन्ता रेखांकित हुईं, “अरे ! तुम्हें कैसे ?” विरह में गत वर्षों रही सलाहकार ..

जात-पात धर्म, रंगभेद भाषा न समझें, न जाने कहां से आ ,बदल दिया इतिहास,
फिर भी न सीखा इन्सान, सबसे प्रेम, अपना-पराया न करना,न ही जीने की कला,
'सुरक्षा कवच' ही तो है उपाय, याद रखें इस युद्ध दौरान, भूल-चूक दावत 'उसकी'
ईमानदारी से निष्ठा पकड़ें, जिन्दगी गाड़ी में रफ्तार से, बस मंजिल पर है 'पहुंचना',
'खुद को करें बुलन्द' भाग्य-विधाता बनें, इसका सही मायना खोजना है, बूझना भी,
'निराशा चक्रव्यूह' में न फंसे, सकारात्मक पहलू थामे रहें, भरेगी झोली खुशियों से।

'कोरोना अनुभव' न आसान, न ही सरल, परिवार चिंतित, लड़ना ही सिर्फ 'उपाय',
'प्रास्त योद्धा उपाधि' बड़ी 'उपलब्धि' बुरे समय में, प्रियजनों का स्नेहमय योगदान,
यादों के पिटारे से, भूलें बिसरे, मित्रों ने किया याद, हुआ बिछड़ो का 'मेल मिलाप'
याद रहेगीं आत्मीयता, दूरीयों में भी 'नजदीकियां', घर-समाज बनी, एक 'मिसाल'।

थैंक्यू गाड् ! अरे वाह, जीती लड़ाई, अनुभव निस्संदेह था अजीबोगरीब, पीड़ा भरा,
किन्तु दिलचस्प .. 'बधाइयों भरा सिलसिला' बना 'रोगी काया' का अचूक मल्हम,
खुद से लड़ाई, हुई सम्भव, रहा साथ अपनों का, ऐसे ही नहीं बने 'कोरोना योद्धा',
समय रहा हमेशा बलवान, छोड़ जाएं निशान, जगाए जज्बा 'गिरकर खड़े होने का,
'कुछ कर गुजरेंगे' हिम्मती हौसला दामन थामें, डगर चाहे न हो सरल व सुगम
ख्वाहिशों से है बरकरार आशिकी, मंजिल ओर जाने की, बस यही ध्येय है बाकी।

गीतांजलि सक्सेना जनवरी 2022